वर्ष 10, अंक 111

सहयोग शुल्क : रु.1 / अप्रैल 2026

दिव्यांग सेतु

संपादक : संतश्री सद्गुरु ॐऋषि स्वामी

"जब मन का संकल्प जागता है,
तब शरीर की सीमाएँ भी साधना बन जाती हैं।"

(प. पू. संतश्री सद्गुरु ॐऋषि स्वामी)

"दिव्यांगता बाधा नहीं, बल्कि दृढ़ संकल्प के साथ
नई ऊँचाइयों तक पहुँचने की शक्ति है।"

(माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी)

निरामय हेल्थ पॉलिसी

पात्रता

- केन्द्र सरकार द्वारा चलाई जा रही यह पॉलिसी सेरेब्रलपाल्सी, ऑटिज्म, मेन्टल रिटार्डेशन, मल्टिपल डिसेबिलिटी से असरग्रस्त दिव्यांगो को मिल सकती है।
- ४०% अथवा उससे अधिक दिव्यांगता से असरग्रस्त व्यक्ति को इस पॉलिसी का लाभ मिल सकेगा।
- रू. २५०/- बी.पी.एल. एवं रु.५००/- ए.पी.एल. दिव्यांगो के लिए सिंगल प्रीमियम

लाभ

रु. १,००,०००/- तक का इंश्योरेंस मिल सकता है।
(निर्धारित किए हुए फंड के अनुसार)

आवेदनपत्र के साथ जमा किए जाने वाले प्रमाणपत्र/दस्तावेज

सिविल सर्जन का दिव्यांगता दर्शाता प्रमाणपत्र

(ऊपर बताई गई चार बीमारियों में से किसी भी एक का उल्लेख प्रमाणपत्र में जरुरी है)

- ✓ वर्तमान की पासपोर्ट साइज़ फोटो
- ✓ राशनकार्ड की प्रमाणित कोपी
- ✓ निवास स्थान का प्रमाण (राशनकार्ड अथवा वोटिंग कार्ड)
- ✓ बी.पी.एल. कार्ड (यदि बी.पी.एल. में आते हैं तो)
- ✓ बैंक पासबुक की फोटो कोपी (बैंक IFSC कोड के साथ)

संपादकीय

समाज की वास्तविक प्रगति तब मानी जाती है जब विकास की धारा में हर व्यक्ति को समान रूप से आगे बढ़ने का अवसर मिले। आज हमारा देश तेजी से विकास की ओर बढ़ रहा है—नई तकनीक, शिक्षा के बढ़ते अवसर और बदलती सामाजिक सोच के साथ कई सकारात्मक परिवर्तन दिखाई दे रहे हैं। लेकिन इन सबके बीच यह सुनिश्चित करना भी उतना ही आवश्यक है कि समाज का कोई भी वर्ग, विशेष रूप से दिव्यांगजन, विकास की इस यात्रा से पीछे न रह जाए। दिव्यांगजन हमारे समाज का अभिन्न हिस्सा हैं। उनमें भी वही सपने, वही आकांक्षाएँ और वही क्षमताएँ होती हैं जो किसी भी अन्य व्यक्ति में होती हैं। आवश्यकता केवल इस बात की है कि उन्हें सही अवसर, प्रोत्साहन और सहयोग का वातावरण मिले। जब समाज संवेदनशील दृष्टिकोण अपनाता है और समावेशिता को प्राथमिकता देता है, तब अनेक प्रतिभाएँ सामने आती हैं और प्रेरणा का स्रोत बनती हैं। आज शिक्षा, खेल, कला, तकनीक और रोजगार जैसे विभिन्न क्षेत्रों में दिव्यांगजन अपनी प्रतिभा का अद्भुत परिचय दे रहे हैं। अनेक उदाहरण हमारे सामने हैं जहाँ सीमित संसाधनों और शारीरिक चुनौतियों के बावजूद लोगों ने अपने साहस और मेहनत के बल पर असाधारण उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं। ये कहानियाँ केवल प्रेरणा ही नहीं देतीं, बल्कि यह भी सिखाती हैं कि दृढ़ इच्छाशक्ति और सकारात्मक सोच से किसी भी बाधा को पार किया जा सकता है।समाज की जिम्मेदारी केवल सहानुभूति प्रकट करने तक सीमित नहीं होनी चाहिए। आवश्यक है कि हम समान अवसर, सुगम वातावरण और सम्मानजनक व्यवहार को अपने जीवन का हिस्सा बनाएं। सार्वजनिक स्थानों की सुगमता, शिक्षा में समावेशी व्यवस्था, रोजगार के अवसर और सामाजिक स्वीकार्यता—ये सभी ऐसे कदम हैं जो दिव्यांगजनों को आत्मनिर्भर और सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।"दिव्यांग सेतु" पत्रिका भी इसी उद्देश्य के साथ समाज में जागरूकता और सकारात्मक सोच को बढ़ावा देने का प्रयास कर रही है। यह मंच दिव्यांगजनों की उपलब्धियों, संघर्षों और प्रेरणादायी अनुभवों को समाज के सामने लाने का माध्यम है। जब हम इन कहानियों को पढ़ते हैं, तो हमें यह एहसास होता है कि जीवन में सीमाएँ नहीं, बल्कि संभावनाएँ अधिक महत्वपूर्ण होती हैं।आज आवश्यकता है कि हम सब मिलकर एक ऐसे समाज का निर्माण करें जहाँ किसी भी व्यक्ति को उसकी शारीरिक स्थिति के आधार पर नहीं, बल्कि उसकी क्षमता और प्रयास के आधार पर पहचाना जाए। सहयोग, संवेदनशीलता और सम्मान की भावना ही समाज को सशक्त और मानवीय बनाती है।

आइए, इस दिशा में हम सब मिलकर सकारात्मक कदम बढ़ाएँ और ऐसा वातावरण बनाएँ जहाँ हर व्यक्ति आत्मविश्वास के साथ अपने सपनों को साकार कर सके। यही सच्ची प्रगति है और यही एक समावेशी एवं उज्ज्वल भविष्य की आधारशिला भी है।

दिव्यांग सेतु

मासिक पत्रिका

अप्रैल – 2026, पृष्ठ संख्या – 16

वर्ष – 10 | अंक – 111

✦ प्रेरणास्त्रोत और संपादक ✦

मंत्रयुगपरिवर्तक ॐकार महामंडलेश्वर १००८

प. पू. संतश्री सद्गुरु ॐऋषि स्वामी ।

✦ सह-संपादक ✦

मिहिरभाई शाह

मो. 97241 81999

✦ संपर्क-सूत्र ✦

सेवा समर्पण फाउन्डेशन

ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट(NGO)

Trust Reg. No.: E/20646/Ahmedabad

०१, ग्राउण्ड फ्लोर, आंगी एपार्टमेन्ट,
अन्नपूर्णा पार्टी प्लॉट के सामने, नया
विकासगृह रोड, पालडी,
अहमदाबाद - ३८०००७

(मो.) 99749 55365, 9974955125

✦ मुद्रक ✦

प्रिन्ट विज़न प्रा. लि.

आंबावाडी बाज़ार, अहमदाबाद-6

Phone : 079 26405200

वोइस टू दिव्यांग

पैरों से लिखकर परीक्षा देने वाले छात्र की अद्भुत कहानी

अहमदाबाद शहर से एक ऐसी प्रेरणादायक कहानी सामने आई है जिसने यह साबित कर दिया है कि यदि मन में दृढ़ इच्छाशक्ति और आत्मविश्वास हो, तो कोई भी शारीरिक चुनौती व्यक्ति की सफलता के मार्ग में बाधा नहीं बन सकती। यह कहानी है कक्षा 10 के छात्र नितिन कुमार पासवान की, जिन्होंने अपनी शारीरिक सीमाओं के बावजूद हार नहीं मानी और अपने पैरों से लिखकर बोर्ड परीक्षा दी।

जब परीक्षा केंद्र पर शिक्षकों और अधिकारियों ने उन्हें पूरे आत्मविश्वास के साथ परीक्षा लिखते देखा, तो वे भी भावुक और प्रेरित हो गए। यह दृश्य वहां उपस्थित हर व्यक्ति के लिए प्रेरणा का स्रोत बन गया।

नितिन कुमार पासवान अहमदाबाद के खोखरा क्षेत्र स्थित राष्ट्रभारती हिंदी हाईस्कूल के छात्र हैं। जन्म से ही वे शारीरिक रूप से दिव्यांग हैं और उनके हाथ सामान्य रूप से कार्य नहीं करते। ऐसी परिस्थिति में जहां कई लोग जीवन की चुनौतियों के सामने निराश हो जाते हैं, वहीं नितिन ने अपनी इस स्थिति को कमजोरी नहीं बनने दिया।

जब बोर्ड परीक्षा का समय आया, तो नितिन ने पूरे आत्मविश्वास के साथ परीक्षा केंद्र में प्रवेश किया और अपने पैरों से उत्तर पुस्तिका लिखना शुरू किया। यह दृश्य वहां उपस्थित सभी लोगों के लिए आश्चर्य और प्रेरणा का विषय बन गया।

बचपन से ही नितिन ने यह समझ लिया था कि यदि उन्हें जीवन में आगे बढ़ना है, तो उन्हें अपनी सीमाओं से ऊपर उठकर मेहनत करनी होगी। उन्होंने धीरे-धीरे अपने पैरों से लिखना सीखना शुरू किया। शुरुआत में यह कार्य बेहद कठिन था, लेकिन लगातार अभ्यास और दृढ़ संकल्प के कारण उन्होंने इसमें महारत हासिल कर ली।

सामान्यतः ऐसे मामलों में दिव्यांग विद्यार्थियों को परीक्षा के दौरान लेखक (राइटर) की सुविधा प्रदान की जाती है, जो उनकी ओर से उत्तर लिखता है। लेकिन नितिन ने यह सुविधा लेने से इनकार कर दिया और स्वयं अपने पैरों से लिखकर परीक्षा देने का निर्णय लिया।

यह निर्णय उनके आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता का प्रतीक है। उन्होंने यह दिखा दिया कि मजबूत इच्छाशक्ति और निरंतर प्रयास से व्यक्ति किसी भी चुनौती को पार कर सकता है।

नितिन कुमार पासवान का जीवन संघर्ष और साहस का एक जीवंत उदाहरण है। जन्म से ही शारीरिक रूप से दिव्यांग होने के कारण उनके सामने कई चुनौतियां थीं। दैनिक जीवन के छोटे-छोटे कार्य भी उनके लिए कठिन थे, लेकिन उन्होंने कभी हार नहीं मानी।

जब परीक्षा केंद्र पर शिक्षकों और अधिकारियों ने उन्हें पूरे आत्मविश्वास के साथ परीक्षा लिखते देखा, तो वे भी भावुक और प्रेरित हो गए। यह दृश्य वहां उपस्थित हर व्यक्ति के लिए प्रेरणा का स्रोत बन गया।

उन्होंने अपने जीवन में आत्मनिर्भरता को प्राथमिकता दी और यह निर्णय लिया कि वे दूसरों पर निर्भर रहने के बजाय स्वयं अपने पैरों से लिखकर परीक्षा देंगे। उनके इस निर्णय ने न केवल उनके शिक्षकों और सहपाठियों को प्रभावित किया, बल्कि पूरे समाज के लिए एक प्रेरणादायक उदाहरण प्रस्तुत किया।

नितिन कुमार पासवान की यह कहानी केवल एक छात्र की सफलता की कहानी नहीं है, बल्कि यह पूरे समाज के लिए प्रेरणा का स्रोत है। यह कहानी हमें यह सिखाती है कि जीवन में आने वाली कठिनाइयों से डरने के बजाय उनका सामना साहस और आत्मविश्वास के साथ करना चाहिए।दिव्यांगता किसी व्यक्ति की क्षमताओं को सीमित नहीं करती।सही अवसर,प्रोत्साहन और सहयोग मिलने पर दिव्यांग विद्यार्थी भी असाधारण उपलब्धियां हासिल कर सकते हैं।

नितिन का यह साहसिक कदम यह दर्शाता है कि शिक्षा के प्रति समर्पण और आत्मनिर्भरता का भाव किसी भी व्यक्ति को सफलता की ओर ले जा सकता है। वहीं जिला शिक्षा अधिकारी रोहित चौधरी की पहल यह संदेश देती है कि समाज और प्रशासन यदि मिलकर प्रयास करें, तो कई प्रतिभाशाली विद्यार्थियों का भविष्य संवर सकता है।आज नितिन की कहानी हजारों विद्यार्थियों को प्रेरित कर रही है कि वे परिस्थितियों से हार न मानें। निरंतर प्रयास करते रहें।

यह कहानी हमें यह याद दिलाती है कि दृढ़ संकल्प, मेहनत और सकारात्मक सोच के साथ जीवन की हर चुनौती को पार किया जा सकता है और सफलता का मार्ग स्वयं बन जाता है।

यदि मन में हौसला हो तो शरीर की सीमाएं भी रास्ता नहीं रोक सकतीं। नितिन का आत्मविश्वास हमें सिखाता है कि सफलता का रास्ता मेहनत और हौसले से बनता है।"

DEO रोहित चौधरी की प्रेरणादायक पहल

इस प्रेरणादायक घटना के दौरान अहमदाबाद शहर के जिला शिक्षा अधिकारी (DEO) रोहित चौधरी भी परीक्षा केंद्र के निरीक्षण के लिए पहुंचे थे। जब उन्होंने नितिन को अपने पैरों से उत्तर लिखते हुए देखा, तो वे इस छात्र के साहस और आत्मविश्वास से अत्यंत प्रभावित हुए। उन्होंने महसूस किया कि नितिन जैसे प्रतिभाशाली और मेहनती छात्र को आगे बढ़ने के लिए समाज और प्रशासन दोनों का सहयोग मिलना चाहिए। इसी भावना के साथ उन्होंने एक महत्वपूर्ण और प्रेरणादायक घोषणा की।

रोहित चौधरी ने संकल्प लिया कि नितिन कुमार पासवान की आगे की पूरी शिक्षा का खर्च वे स्वयं वहन करेंगे, ताकि आर्थिक कारणों से उसकी पढ़ाई में कोई बाधा न आए।

इसी भावना के साथ उन्होंने एक महत्वपूर्ण घोषणा की। रोहित चौधरी ने संकल्प लिया कि नितिन कुमार पासवान की आगे की पूरी शिक्षा का खर्च वे स्वयं वहन करेंगे। उन्होंने कहा कि ऐसे विद्यार्थियों का उत्साह बढ़ाना समाज की जिम्मेदारी है। यदि उन्हें सही अवसर और समर्थन मिले, तो वे जीवन में बड़ी उपलब्धियां हासिल कर सकते हैं।

उनकी इस पहल ने नितिन और उसके परिवार को नई उम्मीद दी है और समाज में संवेदनशीलता और सहयोग का संदेश भी दिया है। नितिन का साहसिक कदम हजारों विद्यार्थियों को प्रेरित कर रहा है कि वे अपनी परिस्थितियों से हार न मानें। वहीं जिला शिक्षा अधिकारी रोहित चौधरी की पहल यह संदेश देती है कि प्रशासनिक संवेदनशीलता समाज में सकारात्मक परिवर्तन ला सकती है।

"ऐसे विद्यार्थियों का हौसला बढ़ाना समाज और प्रशासन दोनों की जिम्मेदारी है।" – रोहित चौधरी

समावेशी शिक्षा की दिशा में एक सशक्त पहल – हर बच्चे को मिले समान अवसर

हाल ही में आयोजित "दिव्यांग होली मिलन समारोह" में प्रसिद्ध शिक्षक और मोटिवेशनल स्पीकर खान सर ने एक महत्वपूर्ण मुद्दा उठाया। उन्होंने सुझाव दिया कि देश के हर जिले में दिव्यांग बच्चों के लिए विशेष स्कूल स्थापित किए जाने चाहिए।भारत में लाखों दिव्यांग बच्चे ऐसे हैं जो शारीरिक, मानसिक या संवेदी चुनौतियों के कारण सामान्य स्कूलों में पढ़ाई करने में कठिनाई महसूस करते हैं। कई विद्यालयों में अभी भी रैम्प, विशेष शिक्षण सामग्री और प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी है। ऐसी स्थिति में अनेक बच्चों की शिक्षा बाधित होती है और कई बार वे पढ़ाई बीच में ही छोड़ देते हैं।

यदि हर जिले में विशेष स्कूल स्थापित किए जाएँ, तो बच्चों को उनकी आवश्यकताओं के अनुसार शिक्षा मिल सकेगी। इन स्कूलों में ब्रेल, साइन लैंग्वेज, स्मार्ट टेक्नोलॉजी और प्रशिक्षित शिक्षकों की सहायता से बेहतर शिक्षण संभव होगा।

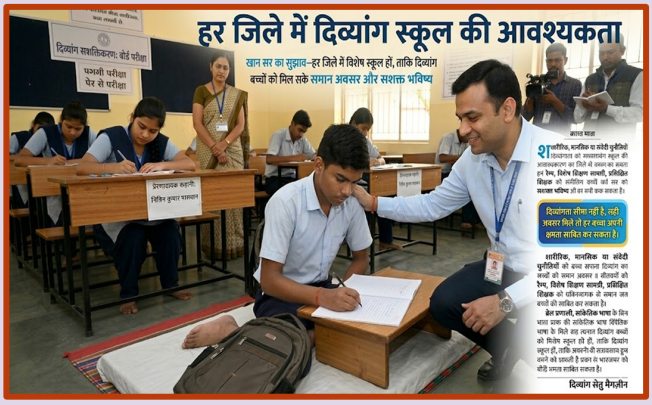

"दिव्यांग सेतु मैगज़ीन" का मानना है कि शिक्षा हर बच्चे का अधिकार है। दिव्यांग बच्चों को भी समान अवसर, सम्मान और सहयोग मिलना चाहिए। यह पहल बच्चों को समाज से अलग करने के लिए नहीं, बल्कि उन्हें एक सुरक्षित और अनुकूल वातावरण देने के लिए है, जहाँ वे बिना झिझक के सीख सकें।आज डिजिटल शिक्षा और सहायक तकनीकों के माध्यम से दिव्यांग बच्चों के लिए नए अवसर खुल रहे हैं। सही दिशा में प्रयास किए जाएँ तो शिक्षा प्रणाली अधिक समावेशी बन सकती है।

सरकार, संस्थाएँ और समाज मिलकर यदि इस दिशा में कार्य करें, तो हर जिले में दिव्यांग स्कूल स्थापित करना संभव है। यह कदम न केवल शिक्षा को सुलभ बनाएगा, बल्कि समाज में समानता और आत्मनिर्भरता की भावना को भी मजबूत करेगा।

संघर्ष से आत्मनिर्भरता तक की प्रेरणादायक यात्रा

समाज में अक्सर यह माना जाता है कि शारीरिक दिव्यांगता किसी व्यक्ति की प्रगति में बाधा बनती है, लेकिन राजस्थान के जोधपुर जिले के रहने वाले रमेश बिश्नोई ने अपने जीवन से इस सोच को पूरी तरह बदल दिया है। उन्होंने यह साबित किया कि दिव्यांगता कमजोरी नहीं, बल्कि मजबूत इच्छाशक्ति और आत्मविश्वास से नई पहचान बनाने का अवसर भी हो सकती है।

शिक्षा के क्षेत्र में भी उनकी उपलब्धियाँ प्रेरणादायक हैं। उन्होंने अपनी पूरी स्कूली और कॉलेज की पढ़ाई पैरों से लिखकर पूरी की और बी.एड. की डिग्री हासिल की। आगे चलकर उन्होंने राजस्थान प्रशासनिक सेवा (RAS) की तैयारी का लक्ष्य रखा, जो उनके आत्मविश्वास और मेहनत का प्रमाण है। रमेश केवल पढ़ाई तक सीमित नहीं रहे। वे एक राज्य-स्तरीय पैरा-स्विमर हैं और क्रिकेट भी खेलते हैं। इसके साथ ही वे अपने पैरों से सुंदर पेंटिंग बनाकर अपनी रचनात्मकता का परिचय देते हैं।

डिजिटल दुनिया में भी उन्होंने अपनी अलग पहचान बनाई है। सोशल मीडिया के माध्यम से वे लाखों लोगों को प्रेरित करते हैं और यह संदेश देते हैं कि "दिव्यांगता अक्षमता नहीं, बल्कि एक अलग प्रकार की क्षमता है।"

रमेश बिश्नोई एक प्रेरक वक्ता के रूप में भी जाने जाते हैं। वे स्कूलों, कॉलेजों और सामाजिक कार्यक्रमों में जाकर युवाओं को प्रेरित करते हैं। उनके भाषणों में आत्मविश्वास, मेहनत और सकारात्मक सोच का संदेश होता है। वे विभिन्न सामाजिक संस्थाओं के साथ मिलकर दिव्यांग व्यक्तियों के अधिकार, शिक्षा और रोजगार के अवसरों के बारे में जागरूकता फैलाने का कार्य भी करते हैं। उनकी यह पहल समाज में समावेशिता और समान अवसर की भावना को मजबूत बनाती है।

आज वे लाखों लोगों के लिए प्रेरणा बन चुके हैं। उनका जीवन हमें यह सिखाता है कि यदि हमारे भीतर मेहनत, धैर्य और आत्मविश्वास हो, तो हम किसी भी परिस्थिति में आगे बढ़ सकते हैं। **"सीमाएँ शरीर में नहीं होतीं, बल्कि हमारे विचारों में होती हैं।"**

महिला दिवस और दिव्यांग नारी शक्ति

हर वर्ष 8 मार्च को मनाया जाने वाला **अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस** महिलाओं के अधिकार, सम्मान और उपलब्धियों को समर्पित है। इस अवसर पर उन दिव्यांग महिलाओं को भी याद करना जरूरी है, जो अनेक चुनौतियों के बावजूद अपने साहस, आत्मविश्वास और मेहनत से समाज में एक नई पहचान बना रही हैं। दिव्यांग महिलाओं को अक्सर दोहरी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है—एक महिला होने के कारण सामाजिक भेदभाव और दूसरी दिव्यांगता के कारण शारीरिक व मानसिक कठिनाइयाँ। इसके बावजूद आज कई दिव्यांग महिलाएँ इन सीमाओं को पार कर शिक्षा, खेल, कला, सामाजिक सेवा और प्रशासन जैसे क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर रही हैं।

दिव्यांग महिलाओं को अक्सर दोहरी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है—एक महिला होने के कारण सामाजिक भेदभाव और दूसरी दिव्यांगता के कारण शारीरिक व मानसिक कठिनाइयाँ। इसके बावजूद आज कई दिव्यांग महिलाएँ इन सीमाओं को पार कर शिक्षा, खेल, कला, सामाजिक सेवा और प्रशासन जैसे क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर रही हैं। ये महिलाएँ यह साबित कर रही हैं कि सही अवसर और सहयोग मिलने पर दिव्यांगता किसी की क्षमता को सीमित नहीं कर सकती। आज कई दिव्यांग महिलाएँ शिक्षक, खिलाड़ी, कलाकार और सामाजिक कार्यकर्ता बनकर समाज के लिए प्रेरणा का स्रोत बन रही हैं।

"सशक्त नारी वही है जो हर परिस्थिति में अपने हौसले से आगे बढ़ती है।"

दिव्यांग महिलाओं के सशक्तिकरण में शिक्षा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि बचपन से ही उन्हें उचित शिक्षा, प्रशिक्षण और आत्मविश्वास दिया जाए, तो वे जीवन में आत्मनिर्भर बन सकती हैं। आज ब्रेल प्रणाली, सांकेतिक भाषा और आधुनिक तकनीक के माध्यम से शिक्षा को अधिक सुलभ बनाया जा रहा है, जो एक सकारात्मक बदलाव का संकेत है।

इसके साथ ही, सरकार और सामाजिक संस्थाओं को दिव्यांग महिलाओं के लिए रोजगार और कौशल विकास के अवसर बढ़ाने चाहिए। जब वे आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनती हैं, तो उनका आत्मविश्वास बढ़ता है और वे समाज में सम्मान के साथ जीवन जी पाती हैं।

महिला दिवस केवल उत्सव नहीं, बल्कि एक अवसर है यह समझने का कि हम दिव्यांग महिलाओं को कैसे बेहतर अवसर और सम्मान दे सकते हैं। यदि परिवार, समाज और सरकार मिलकर सहयोग करें, तो दिव्यांग महिलाएँ न केवल अपने जीवन को बेहतर बना सकती हैं, बल्कि समाज के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं।.

मनो दिव्यांग बच्चों के साथ हर्षोल्लास से मनाई

सेवा, संवेदना और मुस्कान से भरा एक सुंदर प्रयास

मनो दिव्यांग बच्चों के लिए निरंतर कार्य कर रही स्मित चाइल्ड एजुकेशन ट्रस्ट द्वारा होली (धुलेटी) के पावन अवसर पर एक विशेष आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य बच्चों के जीवन में खुशी, अपनापन और उत्सव की भावना लाना था। इस अवसर पर दाताओं के सहयोग से मनो दिव्यांग बच्चों को खजूर, धानी, ममरा, मूंगफली (सिंग), चना और मिठाइयों की किट वितरित की गई। बच्चों के चेहरों पर खुशी और उत्साह देखने लायक था, जिससे पूरे वातावरण में सकारात्मक ऊर्जा और आनंद का संचार हुआ।

कार्यक्रम के दौरान बच्चों ने तिलक होली मनाई, जिसमें रंगों के साथ-साथ प्रेम, स्नेह और अपनत्व की झलक साफ दिखाई दी। यह आयोजन केवल एक उत्सव नहीं था, बल्कि समाज के प्रति संवेदनशीलता और सेवा भावना का एक प्रेरणादायक उदाहरण भी बना।

स्मित चाइल्ड एजुकेशन ट्रस्ट का यह प्रयास दर्शाता है कि छोटे-छोटे कदम भी किसी के जीवन में बड़ी खुशियाँ ला सकते हैं। इस तरह के सामाजिक कार्य न केवल मनो दिव्यांग बच्चों के जीवन को उज्जवल बनाते हैं, बल्कि समाज को भी अधिक संवेदनशील और समावेशी बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

“खुशी बाँटने से बढ़ती है, और एक छोटी मुस्कान किसी के जीवन को रोशन कर सकती है।”

नारी रत्न: साहस और आत्मनिर्भरता की मिसाल

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के पावन अवसर पर **"नारी रत्न अवॉर्ड"** कार्यक्रम का भव्य आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम केवल सम्मान का मंच नहीं, बल्कि उन अदम्य साहस, आत्मविश्वास और संघर्ष की कहानियों का उत्सव था, जिन्होंने समाज को नई दिशा और प्रेरणा दी है।

इस विशेष अवसर पर उन साहसी विधवा बहनों को सम्मानित किया गया, जिन्होंने जीवन की सबसे कठिन परिस्थितियों का सामना करते हुए हार मानने के बजाय हिम्मत और दृढ़ निश्चय के साथ आगे बढ़ने का मार्ग चुना।

अपने जीवनसाथी को खोने के बाद भी उन्होंने स्वयं को टूटने नहीं दिया, बल्कि अपने परिवार और बच्चों की जिम्मेदारी को पूरी निष्ठा और समर्पण के साथ निभाया। उन्होंने अपने बच्चों को न केवल बेहतर शिक्षा और संस्कार दिए, बल्कि उन्हें आत्मनिर्भर और मजबूत भी बनाया। इन महिलाओं ने यह साबित किया कि परिस्थितियाँ चाहे कितनी भी चुनौतीपूर्ण क्यों न हों, यदि इरादे मजबूत हों तो हर मुश्किल को पार किया जा सकता है।

ये प्रेरणादायक महिलाएं समाज के लिए एक जीवंत उदाहरण हैं। उन्होंने अपने संघर्ष को कमजोरी नहीं बनने दिया, बल्कि उसे अपनी ताकत बना लिया। अपने बच्चों को आत्मनिर्भर बनाना, समाज में सम्मान के साथ जीना और हर दिन एक नई उम्मीद के साथ आगे बढ़ना — यही इनकी असली जीत है।

"नारी रत्न अवॉर्ड" केवल एक सम्मान नहीं, बल्कि उन अनगिनत कहानियों का उत्सव है जो हमें यह सिखाती हैं कि नारी केवल संवेदनशील ही नहीं, बल्कि असीम शक्ति और साहस का प्रतीक भी है। ये महिलाएं हमें प्रेरित करती हैं कि जीवन में चाहे कितनी भी कठिनाइयाँ आएं, हमें हार नहीं माननी चाहिए।

ऐसी संघर्षशील, सशक्त और आत्मनिर्भर नारियों को शत-शत नमन। वास्तव में, महिलाएं समाज की सच्ची "नारी रत्न" हैं, जो अपने त्याग, प्रेम और साहस से इस दुनिया को बेहतर बनाती हैं।

वोइस टू दिव्यांग

डिजिटल समाधान से आसान हुई सरकारी सेवाओं तक पहुँच

भारत में दिव्यांगजनों के अधिकार और आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने के लिए लगातार प्रयास किए जा रहे हैं। इसी दिशा में Government of Maharashtra ने मार्च 2026 में दिव्यांग सहायक पोर्टल की शुरुआत की। यह पोर्टल दिव्यांग नागरिकों के लिए एक ऐसा डिजिटल प्लेटफॉर्म है, जो विभिन्न सरकारी योजनाओं और सेवाओं को एक ही स्थान पर उपलब्ध कराता है।पहले दिव्यांगजनों को सरकारी योजनाओं का लाभ लेने के लिए अलग-अलग विभागों के चक्कर लगाने पड़ते थे। आवेदन प्रक्रिया जटिल और समय लेने वाली होती थी, जिससे कई जरूरतमंद लोग योजनाओं से वंचित रह जाते थे। दस्तावेज़ों की कमी, जानकारी का अभाव और शारीरिक असुविधाओं के कारण उन्हें अतिरिक्त कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था।

इन समस्याओं को ध्यान में रखते हुए विकसित किया गया यह पोर्टल एक सरल और प्रभावी समाधान प्रस्तुत करता है। अब दिव्यांगजन घर बैठे ही ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं, अपनी पात्रता की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं और आवेदन की स्थिति भी आसानी से देख सकते हैं। इससे समय और मेहनत दोनों की बचत होती है।

दिव्यांग सहायक पोर्टल की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें विभिन्न योजनाओं और सेवाओं की जानकारी एक ही स्थान पर उपलब्ध है। अब नागरिकों को अलग-अलग कार्यालयों में जाने की आवश्यकता नहीं है। यह पोर्टल उन्हें एकीकृत और आसान अनुभव प्रदान करता है।

इस प्लेटफॉर्म के माध्यम से दिव्यांगजन कई महत्वपूर्ण सेवाओं के लिए आवेदन कर सकते हैं, जैसे—दिव्यांग प्रमाणपत्र, वित्तीय सहायता, शिक्षा से जुड़ी छात्रवृत्तियाँ, रोजगार योजनाएँ और सहायक उपकरण प्राप्त करना। इसके साथ ही आवेदन प्रक्रिया को सरल और उपयोगकर्ता-अनुकूल बनाया गया है, ताकि कम तकनीकी ज्ञान रखने वाले लोग भी इसका लाभ उठा सकें।

वोइस टू दिव्यांग

पारदर्शिता, सुविधा और आत्मनिर्भरता की ओर कदम

डिजिटल तकनीक से बढ़ी पारदर्शिता और विश्वास

दिव्यांग सहायक पोर्टल के माध्यम से प्रशासनिक पारदर्शिता में भी उल्लेखनीय सुधार देखने को मिल रहा है। पहले जहां आवेदन की स्थिति जानने के लिए बार-बार कार्यालय जाना पड़ता था, अब आवेदक ऑनलाइन ही अपनी प्रगति देख सकते हैं। इससे न केवल समय की बचत होती है, बल्कि प्रक्रिया में पारदर्शिता भी बढ़ती है और देरी या अनियमितताओं की संभावना कम होती है।

यह पोर्टल सरकारी अधिकारियों को भी बेहतर डेटा प्रबंधन में सहायता करता है, जिससे योजनाओं का लाभ सही और जरूरतमंद लोगों तक पहुँच सके। यह व्यवस्था प्रशासन को अधिक प्रभावी और जवाबदेह बनाती है।

सामाजिक समावेश और भविष्य की संभावनाएँ

यह पहल केवल एक तकनीकी सुविधा नहीं, बल्कि सामाजिक सशक्तिकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। जब दिव्यांगजनों को आवश्यक सेवाएँ आसानी से उपलब्ध होती हैं, तो वे शिक्षा, रोजगार और सामाजिक गतिविधियों में अधिक सक्रिय भागीदारी कर सकते हैं। इससे वे समाज की मुख्यधारा से जुड़ते हैं और आत्मनिर्भर बनते हैं।

विशेषज्ञों का मानना है कि यदि इस प्रकार की डिजिटल सेवाएँ पूरे देश में लागू की जाएँ, तो लाखों दिव्यांगजनों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाया जा सकता है। यह पहल अन्य राज्यों के लिए भी एक प्रेरणादायक मॉडल बन सकती है।

“समान अवसर और सरल सुविधाएँ ही सशक्त समाज की असली पहचान हैं।”

वोइस टू दिव्यांग

दिव्यांग क्रिकेट स्पोर्ट्स फेस्टिवल 2026

खेल के मैदान में हौसले की नई उड़ान

भारत में खेल केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं, बल्कि आत्मविश्वास, अनुशासन और संघर्ष की भावना को मजबूत करने का एक सशक्त जरिया है। जब दिव्यांग खिलाड़ी मैदान में उतरते हैं और अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करते हैं, तो वे समाज के लिए प्रेरणा का जीवंत उदाहरण बन जाते हैं।

इसी उद्देश्य को साकार करता हुआ National Divyangjan Cricket Sports Festival 2026 वर्ष 2026 में भोपाल में आयोजित किया गया। इस भव्य आयोजन में देशभर से आए 350 से अधिक दिव्यांग खिलाड़ियों ने भाग लिया और अपनी प्रतिभा का शानदार प्रदर्शन किया।

इस फेस्टिवल का मुख्य उद्देश्य केवल खेल प्रतियोगिता आयोजित करना नहीं था, बल्कि समाज को यह संदेश देना था कि दिव्यांगता किसी भी व्यक्ति की क्षमता को सीमित नहीं कर सकती। सही अवसर और प्रोत्साहन मिलने पर दिव्यांग खिलाड़ी भी बड़े से बड़े लक्ष्य हासिल कर सकते हैं।

100 घंटे का अनोखा क्रिकेट मैराथन

इस आयोजन की सबसे विशेष और चुनौतीपूर्ण बात थी लगातार 100 घंटे तक क्रिकेट खेलने का लक्ष्य। यह अपने आप में एक अद्वितीय पहल थी, जिसे पूरा करना आसान नहीं था। लेकिन खिलाड़ियों ने अपने जोश, जुनून और टीम भावना के साथ इस चुनौती को स्वीकार किया। मैदान में हर खिलाड़ी ने अपने प्रदर्शन से यह साबित किया कि खेल में असली ताकत शरीर की नहीं, बल्कि मन और आत्मविश्वास की होती है।

पूरे देश से जुड़ा खेल का उत्सव

इस फेस्टिवल में देश के लगभग 25 राज्यों से खिलाड़ी शामिल हुए, जिनमें शारीरिक रूप से दिव्यांग, श्रवण बाधित और अन्य प्रकार की दिव्यांगता वाले प्रतिभागी शामिल थे। सभी ने मिलकर टीम भावना और खेल भावना का बेहतरीन उदाहरण प्रस्तुत किया।

यह आयोजन केवल एक प्रतियोगिता नहीं, बल्कि एक ऐसा मंच बना, जहाँ दिव्यांग खिलाड़ियों को अपनी प्रतिभा दिखाने और पहचान बनाने का अवसर मिला।

खेल के जरिए बदलती सोच - अवसर से मिलती है पहचान

NATIONAL DIVYANGJAN CRICKET SPORTS FESTIVAL 2026 ने यह साबित कर दिया कि खेल केवल जीत-हार नहीं, बल्कि आत्मविश्वास और समानता का प्रतीक है। भोपाल में आयोजित इस फेस्टिवल ने समाज में दिव्यांगजनों के प्रति सकारात्मक सोच को मजबूत किया। मैदान में खिलाड़ियों का उत्साह देखने लायक था। हर चौका-छक्का और दर्शकों की तालियों ने पूरे माहौल को उत्सव में बदल दिया। खिलाड़ियों ने अपने प्रदर्शन से यह दिखाया कि हौसला और मेहनत किसी भी सीमा से बड़ा होता है।

यह आयोजन दिव्यांग खिलाड़ियों के लिए एक महत्वपूर्ण मंच साबित हुआ, जहाँ वे अपनी प्रतिभा को सामने ला सके। अक्सर अवसरों की कमी के कारण उनकी क्षमता छुपी रह जाती है, लेकिन ऐसे फेस्टिवल उन्हें आगे बढ़ने का रास्ता दिखाते हैं। विशेषज्ञों के अनुसार, यदि ऐसे आयोजन लगातार होते रहें, तो भारत में पैरा स्पोर्ट्स को नई पहचान मिल सकती है और कई नई प्रतिभाएँ उभरकर सामने आएंगी।

यह फेस्टिवल केवल एक आयोजन नहीं, बल्कि एक प्रेरणा है—जो दिव्यांग युवाओं को अपने सपनों को पूरा करने की दिशा में आगे बढ़ने का हौसला देता है।

"हौसला ही वह ताकत है, जो हर सीमा को पार कर सकता है।"

ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट संचालित

(N.G.O.)

संचालित

ॐकार दिव्यांग ट्रेनींग डे-केर सेन्टर

मानसिक दिव्यांग बच्चों के लिए निःशुल्क तालीम संस्था

▲ World Autisum Day ▲ Table Tennis Competition ▲ Painting Competition ▲ Sports Day Celebration
▲ Rakshabandhan Celebration ▲15th August Celebration ▲ Janmashtami Celebration
▲ Anand Niketan School Visit ▲ Picnic ▲ Traffic Awareness Program Navratri Celebration

★★★ शाला में प्रवेश के लिए संपर्क करें ★★★

सुमेल ५, हाउस नं.: ४८/डी, बिजनेस पार्क, चामुंडा ब्रीज कोर्नर,
असारवा, अहमदाबाद-३८००१६ मो.: 99749 55125, 99749 55365

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर